Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 7257905

Roll No. 23262000041
Total Mark 72/75.00

Exam BACHELOR OF ARTS_DEC-2023
Subject A300101T - THEORETICAL AND ANALYTICAL STUDY

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	5/5						
1B	5/5						
1C	5/5						
1D	5/5						
1E	5/5						
1F	5/5						
1G	5/5						
1H	5/5						
1I	5/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	15/15						
5	0/15						
6	12/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Room No.:
Date of Exam : 22/12/23 Shift : 1
Paper Code: A300101T Subject: Music Sitar Year/Sem: Ist
Name of Candidate: AKANKSHA SONI
Roll No. 2 3 2 6 2 0 0 0 0 4 1

COE Facsimile

Signature of Invigilator

Signature of Candidate

PART-II

MARKS OBTAINED

Q	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A 3 0 0 1 0 1 T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: BA fine arts and Performing Arts
Session: 2023-24 Year/Semester: Ist
Subject Name: Music Sitar
Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code
A 3 0 0 1 0 1 T

Exam Date
2 2 1 2 2 0 2 3

Name of Candidate
AKANKSHA SONI

Father's Name
LUXMI KANT

महाविद्यालय का कोड
College Code
K N 0 1 5

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code
K N 0 1 5

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam
संस्थागत Regular ● भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○
व्यक्तिगत Private ○ बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.
7257905

A 3 0 0 1 0 1 T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 1 6 3 4 9

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number
2 3 2 6 2 0 0 0 0 4 1

प्रश्न पत्र कोड Paper Code
A 3 0 0 1 0 1 T

Signature of Candidate

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. [illegible]
2. [illegible]

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken the circles completely.

Correct Method	Incorrect Method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ⊙

4. Make no Stray marks on this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्धारित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखें तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाइल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा सुधार नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9

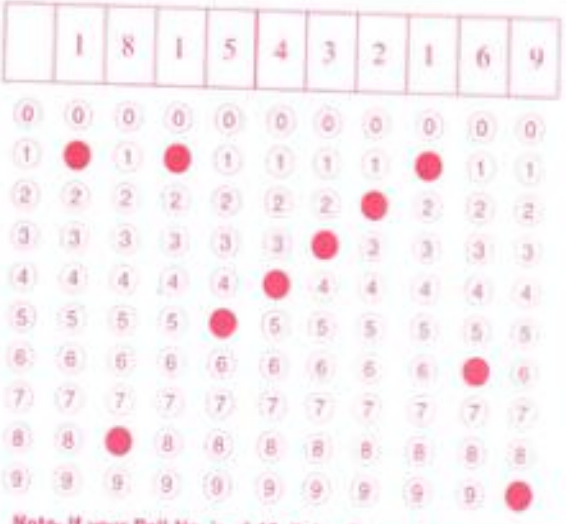

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

Paper Code A300101T

1

खण्ड - अ

उत्तर - 1 (a)

वादी स्वर - वह स्वर जिसका प्रयोग किसी भी राग में सर्वाधिक होता है उसे वादी स्वर कहते है। वादी स्वर को राजा की संज्ञा दी जाती है।

राग यमन का वादी स्वर - गंधार (ग)

संवादी स्वर - वह स्वर जिसका प्रयोग किसी भी राग में वादी स्वर से कम परन्तु अन्य स्वरो की अपेक्षा अधिक होता है उसे संवादी स्वर कहते है राग रूपी साम्राज्य में संवादी स्वर को मंत्री की उपाधि दी गयी है।

राग यमन का संवादी स्वर - निषाद (नि)

उत्तर - 1 (b)

स्वर - स्वर के विषय में कहा गया है कि -

स्वर स्वयं रूति राजते

22 श्रुतियों में 12 श्रुतियों को स्वर की संज्ञा दी गयी है।

स्वर मुख्य दो प्रकार के होते है

1. शुद्ध
2. विकृत

शुद्ध स्वर - वे स्वर जिनमें किसी प्रकार का कोई चिन्ह नही होता है वे शुद्ध स्वर कहलाते है।

उदाहरण - सा, रे, ग, म, प, ध, नि

Do Not Write anything in this Portion

विकृत स्वर - जो स्वर अपनी शुद्ध अवस्था से ऊपर तथा नीचे चलन करते है उन्हे विकृत स्वर कहा जाता है।
ये दो प्रकार के होते है।
1. तीव्र विकृत स्वर
2. कोमल विकृत स्वर

तीव्र विकृत स्वर - वे स्वर जो अपनी शुद्ध अवस्था से ऊपर की ओर चलन करते है तीव्र विकृत स्वर कहलाते है उनके ऊपर खड़ी रेखा लगती है
उदाहरण - तीव्र मध्यम (मं)

कोमल विकृत स्वर - वे स्वर जो अपनी शुद्ध अवस्था से नीचे की ओर भी चलन करते है कोमल विकृत स्वर कहलाते है। उनके नीचे पड़ी रेखा का चिन्ह होता है।
उदाहरण - रे , ग , ध , नि

चलन के आधार पर भी स्वरों दो भागों मे विभाजित किया गया है
(1) चल स्वर
(2) अचल स्वर

चल स्वर - जो स्वर अपनी अवस्था ऊपर नीचे खिसकते है।
रे , ग , म , ध , नि

अचल स्वर - जो स्वर अपनी अवस्था मे स्थिर होते है
सा , प

Paper Code A300101T

उत्तर - 1 (C)

राग भूपाली - राग भूपाली ~~[illegible]~~ कल्याण थाट का राग है राग भूपाली का वादी स्वर गंधार (ग) तथा संवादी स्वर धैवत (ध) होता है राग भूपाली की जाति औडव - औडव है इस राग को ख्याल, धमार आदि गायन शैली में गाया जाता है।
राग भूपाली का गायन वादन समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

उत्तर - 1 (d)

आरोह - जब स्वरों को उनके चढ़ते हुये क्रम में किसी राग में गाया जाये तो उसे आरोह कहते है

उदाहरण - सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां

अवरोह - जब स्वरो को उनके उतरते हुये क्रम में गाया जाता है तो उसे अवरोह कहते है।

उदाहरण - सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A300101T

उत्तर - 1(e)

सप्तक - स्वरों के नियमित तथा क्रमबद्ध समूह को सप्तक कहते है। सप्तक मुख्यतः तीन प्रकार के होते है।

1. मन्द्र सप्तक
2. मध्य सप्तक
3. तार सप्तक

मन्द्र सप्तक - जिसमें स्वरों के नीचे बिन्दी का चिन्ह होता है उस सप्तक मे गाये जाने वाले स्वर हृदय से होकर निकलते है।

उदाहरण - सा़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़

मध्य सप्तक - इन स्वरों मे किसी प्रकार का कोई चिन्ह नहीं होता है। ये स्वर कण्ठ से गाये जाते है।

उदाहरण - सा, रे, ग, म, प, ध नि

तार सप्तक - इन स्वरो के ऊपर बिन्दी का चिन्ह होता है।

उदाहरण -

सां रें गं मं पं धं निं

Paper Code A300101T

उत्तर - 1(f)

तीन ताल - तीनताल को त्रिताल भी कहते है यह तन्त्र वाद्यों की ताल है (अर्थात इसका वादन वाले पर किया जाता है। यह ताल ख्याल गायन शैली मे गाई जाती है।

मात्रा - 16
विभाग - 4
ताली - 1, 5, 13
खाली - 9

ठेका

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
x				2				0				3			

उत्तर 1 (g)

ताल दादरा - ताल दादरा मे 6 मात्रा होती होती है इसमे 2 विभाग है।

मात्रा - 6
ताली - 1
खाली - 4
विभाग - 2

ठाह

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल-	धा	धी	ना	धा	तू	ना
चिन्ह-	x			0		

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

उत्तर - 1(h)

आश्रय राग - जिस राग का जन्म किसी था से हुआ हो अर्थात राग कि है थाट पर आश्रित हो उसे आश्रय राग क. है।

उदाहरण - राग यमन एक आश्रय राग है।

उत्तर - 1 (i)

सितार के बोल - सितार मे मुख्यतः दो बोल प्रयोग किये जाते है।

(i) दा
(ii) रा

दा - जब तार को अन्दर की बजाते है तब पा कि ध्वनि उत्पन्न होती है। उसे (आरूर्ष) कहते है।

रा - जब तार से किसी स्वर को बाहर की ओर बजाते है। उसे अपकर्ष कहते है।

Paper Code

7

खण्ड - ब

उत्तर – 4

सितार - सितार के अविष्कार के विषय में अनेक मत प्रचलित है। -
कुछ विद्वान इसके अविष्कारक अमीर खुसरो को तथा कुछ इसे तानसेन जी की देन बताते हैं।
एक यह भी मत है कि गुप्तकाल के राजा समुद्रगुप्त जो विक्रमादित्य नाम से जाने जाते हैं। वे स्वयं सितार वादक थे तथा सितार का प्रचलन उन्ही के समय से हुआ!
वीणा की वाह से ५ और तारों को लगाकर इसे सितार की संज्ञा दे दी गयी!
सितार को पूर्व में **सेहतार** कहा जाता था बाद में इसका नाम बदलकर सितार हो गया
सितार के विभिन्न अंग निम्नलिखित इस प्रकार है

1. सात तार
2. तुम्बा
3. तबली
4. डाँड / डण्डी
5. खूंटी
6. घुड़च
7. मनका
8. लंगोट / कील
9. गुलु
10. तारगहन
11. अटी
12. मिजराव

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

सितार

सात तार - सितार मे सात तार होते है जो अटी से होकर खुंटियो तक जाते है।
प्रथम तार को बाज का तार कहते है। इसे मन्द्रसप्तक के मध्यम (म़) से मिलाया जाता है।
दूसरा तथा तीसरा तार जोड़ी का तार होता है। इन्हे षड्ज के तार भी कहते है तथा इन्हे मन्द्रसप्तक के षड्ज (सा) से मिलाया जाता है।
चौथा तार स्टील (लोहे) का तार होता है।
पांचवा तार पीतल (तांबे) का तार होता है।
छठे तार को छोटी चिकारी कहते है।
सातवे तार को बड़ी चिकारी कहते है तथा [illegible] का तार भी कहते है इसे तार सां से मिलाया जाता है।

2. तुम्बा - यह तुम्ब फल लौकी / कद्दु के खोखले भाग से बना होता है आकार मे गोल होता है

तबली - तुम्बा के ऊपर का भाग जहां से तार होते हुये जाते है।

डांड - यह खोखली डण्डी होती है। जिससे तार जाते है।

खूंटी - इनसे तारों को बांधा जाता है।

घुड़ज - तबली के ऊपर घुड़ज लगे होते है एक छोटा तथा एक बड़ा

लंगोट / कील - इससे तार बंधे होते है

गुलू - जिस भाग से तुम्बा तथा डांड जुड़े होते है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

तारगहन - तारगहन एक हाथी दांत की पट्टी होती है जिसमे छेद होते है। उनसे होकर तार जाते है।

अटी - तारगहन के आगे लगी होती है।

मिजराब - धातु का बना तर्जनी अंगुली मे पहनने वाला यंत्र जिससे सितार बजाया जाता है।

खण्ड - स

उत्तर - 6

वादी स्वर - वे स्वर जिनका प्रयोग किसी राग मे सर्वाधिक हो उन्हे वादी स्वर कहते है राग रूपी राज्य मे इसे राजा की उपाधि प्राप्त है। यमन राग मे गंधार वादी स्वर है

संवादी स्वर - वे स्वर जिनका प्रयोग राग मे वादी की अपेक्षा कम परन्तु अन्य स्वरो से अधिक हो संवादी स्वर कहलाते है।
उदाहरण - यमन मे निषाद संवादी है। इसे मंत्री की उपाधि प्राप्त है।

पकड़ - वह छोटा से छोटा स्वर समूह जिससे किसी राग की पहचान की जा सके उसे पकड़ कहते है

विभाग - ताल को सरलता पूर्वक समझने के लिये उसकी मात्राओं को छोटे छोटे खण्डों मे विभाजित कर दिया जाता है इन खण्डों को विभाग कहते है। इसे खड़ी रेखा से दर्शाते है।

ताली - ताल की वह मात्रा जिसे हाथ द्वारा ताली बजाकर अथवा हाथ से आघात करके प्रदर्शित करते है उसे ताली कहते है। इसे भरी भी कहा जाता है इसे संख्या से प्रदर्शित करते है
उदाहरण = 2, 3 4

सम - ताल की पहली मात्रा जहां से ठेका शुरू होता है वह सम कहलाता है! सम मे सदैव ताली पड़ती है! इसे x से प्रदर्शित करते है।

स्वर - स्वर के विषय में कहा गया है कि स्वर **स्वयं इति राजते** अर्थात जो स्वयं से राजते हो उसे स्वर कहा जाता है 22 श्रुतियों में 12 को स्वर की संज्ञा दी गयी है ये सप्तक मे दूर-दूर पर फैले होते है

स्वर के प्रकार - स्वर मुख्यत: दो प्रकार के होते है।

1. शुद्ध स्वर
2. विकृत स्वर

Do Not Write anything in this Portion

शुद्ध स्वर - वे स्वर जिन पर कोई चिन्ह नहीं है वे शुद्ध स्वर कहलाते हैं

~~यथा~~ **उदाहरण** - सा रे ग म प ध नि

विकृत स्वर - वे स्वर जो अपनी अवस्था से ऊपर अथवा नीचे की ओर गमन करते हैं विकृत स्वर कहलाते हैं। विकृत स्वर मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

15

Paper Code

16

X

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Paper Code

20

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

21

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

23

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

24